# एक

## हुजूर 1

यूं तरस खाते रहे काहे हुजूर ?
जिन्दगी का अर्थ है आहें हुजूर

शहर की सारी हवा थम जायेगीं,
अब बहेंगी सिर्फ अफवाहें हुजूर

सूर्यने कर दी खड़ी जब अड़चनें,
नींद बतलाती नईं राहें हुजूर

तोहफ़े में अश्क मोती के दिये,
आप झूठे मान ले चाहे हुजूर

फूल देते क्यूं रहे हर शख़्स को ?
है नहीं हर शख्स दरगाहें हुजूर

■

*10.03.1990*

## हुज़ूर 2

आप से शिक्वा है मेरा, एक है शिक्वा हुज़ूर
इस हथेली का ही सारा ले गये नक्शा हुज़ूर ?

पिंजड़े में वह परिंदा फिर से वापस आ गया
किस जगह जायें जहां ना और हो खतरा हुज़ूर ?

ओंठ की चूपकी है मस्जिद : और क्या है शेख जी ?
आंख का ढलना नहीं क्या बंदगी-सज़दा हुज़ूर ?

मैं यहां छत के तले तो आप थे राहेसफ़र–
क्यूं फ़फ़ोलों से भरे तलवे मेरे, कहना हुज़ूर ?

कुछ गलतफ़हमी हमारे बीच यूं है लाजवाब
झील है गहरी कि डूबा चांद है गहरा हुज़ूर ?

कौन-सी ऐसी गज़ल : तेरी न हो मौजूदगी ?
कौन-सा पल है न मुझमें आपका-अपना हुज़ूर ?

■

*28.08.1991*
*18.12.1991*

## तीन

घरों की आंख खूलते ही दिशाएं जाग जायेगीं
सूरज  के रथ की आहट से हवाएं जाग जायेगीं

यहां पतझड़ का मौसम भी यकायक फूल पाता है,
तुम्हारे आगमन पर ये लताएं जाग जायेगीं

अकेलापन लिए कैसे बितेगी रात निद्रा में
किधर से कौन जाने कईं बलाएं जाग जायेगीं

मनोहर, रिक्त कोरा एक काग़ज़ के सिवा क्या है ?
तुम्हारे दस्तख़त पाकर दुवाएं जाग जायेगीं

उदय का अर्थ क्या है, अर्थ क्या है अस्त का दोस्तो
मनोहर सो रहा होगा, सभाएं जाग जायेगीं

■

*1990*

## चार

रह गये हम हाथ को मलते हुए
घर जलाकर दोस्त सब चलते हुए

याद आती बापु की हर सांझ को
देखता जब सूर्य को ढलते हुए

है गली सुनसान जब से तू नहीं
क्यों तमस है दीप के जलते हुए

चेहरे पे कईं दरारें हो गईं
आइने को यार, संभलते हुए

दूर समदर पार तेरा देश है
पांव मिट्टी के मिले गलते हुए

■

*1990*

## पांच

छलकती रही ज़िंदगी की सुराही
अचानक सुरालय गया छोड़ राही

शिवालय तरफ़ चल दिये शेख जी तो
बहे शंख से स्वर : इलाही इलाही

नहीं मैं मरा हूं, मग़र जी रहा हूं
मिरी ये गज़ल दे रही हैं गवाही

सकल सांस यादें सपन यातनाएं
रहेंगे, तथापि न होगी तबाही

रहस्योंभरी सांझ डूबी नदी में
रहा हाथ में अजनबी बुद्बुदा ही

■

*1991*

छः

स्वयं को स्कंध पर उठाता हूं
मैं अपने घर में हंमेश आता हूं

व्यथा का दम यूं ही लगाता हूं
जनाब, गुस्से को गुड़गुड़ाता हूं

फूलों की नाव ले किनारे पर
सुगन्धियों को गुनगुनाता हूं

हुआ यह हाल अरे, निद्रा में
किसी को स्वप्न में जगाता हूं

पता नहीं है कहां जाना है
किवाड़ किस का खटखटाता हूं

■

## सात

लड़खडाते पांव सा मेरा शहर
हो रहे पथराव सा मेरा शहर

ये जो देहशत गर्दिशें ग़मगनियां
बन्ध-सा घेराव-सा मेरा शहर

की बगावत कालने भूगर्भ में
अब बूढ़े उमराव सा मेरा शहर

कौन माने अन्दरूनी बात को ?
क्यूं निरे अलगाव सा मेरा शहर ?

अस्पतालें आह सपनों की सड़न
दूझते कुछ घांव सा मेरा शहर

■

*1191*

## आठ

बदल जाती मुहल्ले की सारी हवा
एक लड़की के घर की ज़्यों खिड़की खूले
खूल जाती सभी खूबसूरत कथा
एक लड़की के घर की ज्यों खिड़की खूले

आज पतझड़ के दिन में आयेगी बहार
सांझ हो जायेगी खुश्बू से तरबतर
देख झूमती हुई अेक बांकी लता
एक लड़की के घर की ज्यों खिड़की खूले

एक खिड़की के खूलते ही खूल जाती है
दूसरी भी सीधी सामने छोर की
और नज़रों का पुल बस यूंही बन गया
एक लड़की के घर की ज्यों खिड़की खूले

पानघर के उस दर्पन की परछांइयां
झेलता है कलकत्ती चबाता हुआ
उस लड़के का यारो, वहीं है पता
एक लड़की के घर की ज्यों खिड़की खूले

याद आये ना बिस्तर-ठिकाना अुसे
याद आये ना किये कितने रतजगे
भूल जाता है खुद को भी कितनी दफ़ा ?
एक लड़की के घर की ज्यों खिड़की खूले।

■

*03.03.1990*

# नौ

एक घर व्याकुल उनींदी आंख से देखा करे
लो, गांव सारा सो रहा
दीप पलपल रिक्त पीली आंख से देखा करे
लो, गांव सारा सो रहा

कोई तारा छत उपर के छिद्र से आकर
अचानक आइने में ढल गया
झिलमिलाती याद नीली आंख से देखा करे
लो, गांव सारा सो रहा

यह जो झूले की चहक, ये चूडियों की खनक
नीरव रात में बहती रहें
खन्ड़हर इन्हीं नशीलीं आंख से देखा करे
लो, गांव सारा सो रहा

द्वार मेरे, हाथ अपने जोड़कर हैं रोकते,
तो किस तरह मैं जा सकूं ?
राधिकावत् तू हठिली आंख से देखा करे,
लो, गांव सारा सो रहा

अंधियारे में मनोहर दृश्य को पीता गया,
पीता गया, पीता गया,
जागते ही दूर गीली आंख से देखा करे
लो, गांव सारा सो रहा

■

*23.04.1981*

## दस

मन में एक बगीचा आया मेरा पुलकित भीतर महका
आंगन बिखरी पदपंकज रज लगता सद्य सरोवर महका

प्रथम मेघ-सा पत्र मिला तो आतुर सूना प्रान्तर महका
पंक्ति पंक्ति जलधारा-सी मुखरित-मुद्रित अक्षर महका

बेगम अख्तर की ठुमरी ले बहती जाती रात ख़रज में
लहर लहर में यादें महकीं, महका सूर-समन्दर महका

कज्जलकाले कुन्तल तेरे केश की नदिया बहती जाये
हिलतीडुलती फूल की नौका आई मनभर अत्तर महका

निंदियारे लोचन में तेरा हलके हलके चुपचुप आना
मलयपवनवत् स्पर्श अदीठा पाकर देख, मनोहर महका

■

*25.04.1981*

## ग्यारह

इक लहर आई तो सारा वृक्ष पुष्पित हो गया
आप के आने से मेरा घर सुगंधित हो गया

क्यूं अरे, सूनी गली की बत्तियां हैं भौंकतीं ?
पास की दीवार का खुलना ही कुंठित हो गया

आप तो आये नहीं पर याद ऐसे आ गई
झाँक कर देखा तो यह दर्पन प्रफुल्लित हो गया

घूमती शक़मन्द हालत में हवा आषाढ की
कंठ कोयल का इसी कारण सकंपित हो गया

आइने ही आइने, चारों तरफ़ हैं आइने–
मैं मुझे अड़ता-झिझकता फिर भी शंकित हो गया

■

*1981*

## बारह

शक्य है हो जाय मेरी आखिरी इच्छा ख़तम,
किन्तु मेरे बाद भी होगी नहीं पीड़ा ख़तम

आप के होते हुए क्या हो सके रिश्ता ख़तम ?
जब तलक़ मृग है न होगी तब तलक़ तृष्णा ख़तम

सांस यूंही चल रही है, है नहीं कोई वज़ह,
तू गई तब से ही मेरा हो गया जीना ख़तम

देखते ही ले डुबोये पेड़-पर्वत, ये मकां
फिर भी सागर कर सका ना एक वह तिनका ख़तम

नाक पर थी तर्जनी तो होंठ सबने सी लिये
आदमी के साथ साहब, यूं हुआ किस्सा ख़तम

■

*30.14.2004/शुक्र*

# तेरह

भीड़ चारों ओर क्या कहिये मियां
फिर भी अपनेआप में रहिये मियां

कौन आयेगा पता इस का नहीं
हाथ खुद का है इसे गहिये मियां

रात होते याद मां की आ गई
लग गये हास्टेल को पहिये मियां

झील हूं, दरिया नहीं हूं, दोस्तो
फिर भी कहते हैं इधर बहिये मियां ?

हक़ नहीं 'गर आने वाली सांस पर
हक़ से ज्यादा कुछ नहीं चहिये मियां

■

*31.01.2000*

## चौदह

वो कहते थे श्मशान आया
मैं कहता हूं मक़ान आया

इधरउधर तू रहती होगी
क्यूं लगता है ढ़लान आया

सिर्फ़ ज़रा-सी आंख मिलीं तो
अफ़वाहों में उफ़ान आया

महीनों बात सुनाई मां को
जन्मा तो बे-जुबान आया

एक छोर से दहाड़ आई
एक छोर पर मचान आया

गज़ल कही ज्यों मेरे साहिब
गीता आई, कुरान आया

■

*24.08.2006/गुरु*

# पंद्रह

शहर है ? ना, चेह है, संभालिये
प्रेम नाज़ुक देह है, संभालिये

उस गली में कौन अनभीगा रहे
लो, उपर से मेह है, संभालिये

चांदनी के साथ पाया रतजगा
रात का क्या स्नेह है ? संभालिये

वो मिली, बोली न किन्तु एक लब्ज़
मैं कहूं : फत्तेह है, संभालिये

तू बराबर सोच के करना प्रवेश
वो गुफ़ा, यह गेह है, संभालिये

विश्व क्या है, दोस्त, किस को था पता ?
है, स्वयं सन्देह है, संभालिये

■

*ऋणस्वीकार - हर्षद चंदाराणा*

# सोलह

इस तरफ़ हैं झोंपड़े तो उस तरफ़ माचीस है
रात थी खामोश, अब उसके गले में चीख है

बालघर में नौकरी है, उम्र भी बाईस है,
तो, यहां उस नारी का बेटा ही ला-वारीस है

नालियों का पानी पी बचपन जहां पलता रहा
पास में आरोग्यसेवा का नया ऑफिस है

दूसरा भी है नगर : एथेंस में जो है बसा
कोई नक़्शे में नहीं वो : नाम सोक्रेटीस[1] है

आप लिखवाते रहे तब तक़ लिखूंगा मैं गज़ल
वैसे जो मैं गा रहा, वो आप की बंदिश है

■

*ऋणस्वीकार - हर्षद चंदाराणा*

*1 सुकरात*

## सत्रह

### एक गुजराती सधुक्कडी गज़ल

नहीं रात देखी न देखा सबेरा
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा
जिहां पांव रुक्के तिहां हो सबेरा
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा

हमें क्या अहीं से वहीं तक़ फ़कीरो
खबर छे जवाना वहीं से नहीं तक़
अरे, हमने सारी जमीं को ही घेरा
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा

करेगा क्या छत-छापरे और वंडी ?
रमाई है धूनी तो किस काम बंडी ?
अबे यार, ले जा, अगर सब है तेरा
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा

किहां रख्खूं बोज़ा ? न रख्खूं में रोझा
मिलीं आंख बन्दे, अबी हाल सो जा
जरा देख हमकु तो ले'रा ही ले'रा
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा

करे सिर्फ़ मालिक हुकुम ए ज काफ़ी
रहेगी चिलम ना, रहेगी न साफ़ी
यहां कौन चाचा भतीजा ममेरा ?
उठाओ ये तंबू उठाओ ये डेरा

■